विश्व धरोहर स्थल

पुरातत्व संग्रहालय
साँची

संक्षिप्त इतिहास

साँची का विश्व के बौद्ध पुरातत्व एवं पर्यटन के क्षेत्र में विशिष्ट स्थान है। प्राचीन काल में इसे काकनाय, काकनाव, काकनाद बोट एवं बोट श्री पर्वत इत्यादि नामों से जाना जाता था। रायसेन, सिहोर एवं विदिशा जिलों में यह अन्य बौद्ध स्थलों के मध्य सर्वोच्च पर्वत श्रृंखला, रत्नों में हीरा के सदृश स्थान रखता है। यह स्थल स्वयं में 2300 वर्षो का इतिहास समेटे हुए है। मौर्य शासकों के उत्तराधिकारियों यथा अशोक ने सिहोर जिले में पानगुरारिया स्थल का भ्रमण किया था तथा जैसा कि स्थल पर उपलब्ध शिलालेख से ज्ञात होता है इसने वहाँ एक बौद्ध विहार बनवाया। श्रीलंका के प्राचीन साहित्य में यह वर्णन मिलता है कि अशोक ने वायसराय के रूप में उज्जैन जाते समय उसने विदिशा के एक व्यापारी की पुत्री देवी से विवाह किया। अशोक के काल (276–236 ईसा पूर्व) के शिलालेखों से ज्ञात होता है कि अशोक ने बौद्ध धर्म अपनाने के काफी समय पश्चात् इस धर्म में सकिय रूचि ली। अशोक ने इस स्थान का चयन इसलिये किया क्योंकि यह स्थल ध्यानकिया के लिये अत्यंत उपयुक्त था एवं विदिशा जैसे धनी व्यापारी स्थल से अत्यंत पास में था तथा बेतवा एवं बेस नदी के संगम पर

स्थित होते हुए महत्वपूर्ण व्यापारी मार्ग के समीप था। इस स्थल पर तीसरी शती ईस्वी पूर्व से बारहवीं शती ईस्वी तक बौद्ध स्थापत्य एवं कला लगभग 1300 वर्षों तक पल्लवित एवं पुष्पित हुई। बारहवीं शती के अन्त में साँची वीरान हो गया था एवं समस्त कियाकलाप समाप्त हो गये। यह साँची की कलात्मकता की दृष्टि से वरदान साबित हुआ। सम्पूर्ण भारत में 13 वीं शती तक बौद्ध धर्म लगभग समाप्त प्रायः हो गया जिसका मुख्य कारण विहारों एवं बौद्ध भिक्षुओं का एक वृहत स्तर पर सर्वनाश, राजघराने से संरक्षण का अभाव, जनमानस में उत्साह का अभाव, संघ द्वारा स्वयं को जनसामान्य से अलग करना, आंतरिक कलह एवं विदेशी आकमण इत्यादि थे। कुछ विद्वानों ने लेख किया गया है कि तंत्र किया भी कुछ हद तक बौद्ध धर्म के पतन के लिये उत्तरदायी है। साँची भी इन दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थितियों से बच नहीं सकी। लगभग 600 वर्षों तक साँची की स्थिति अज्ञात अवस्था में रही।

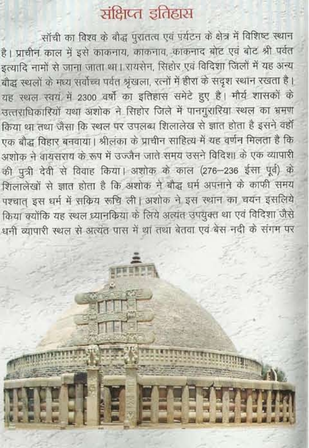

तत्पश्चात् सन् 1818 में जनरल टेलर ने घनी झाड़ियों से आच्छादित साँची की खोज की तथा इसे जन सामान्य के समक्ष लाये।

संग्रहालय

वर्ष 1919 में सर जॉन मार्शल द्वारा सांची में किये गये उत्खनन एवं संरक्षण कार्य के दौरान प्रकाश में आये पुरावशेष प्रारम्भ में पहाडी पर स्थित एक छोटे संग्रहालय में प्रदर्शित किये गये थे। तत्पश्चात् भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने पहाडी के समीप एक विद्यालय भवन प्राप्त किया एवं वर्ष 1966 में इस नये भवन में उपर के लघु संग्रहालय में प्रदर्शित पुरावशेष स्थानांतरित किये गये। इस संग्रहालय में बाराम्दे में प्रदर्शित पुरावशेषों के अतिरिक्त मुख्य हाल एवं चार दीर्घाएं हैं। प्रदर्शित पुरावशेषों में अधिकांशतः साँची स्थल से सम्बद्ध हैं तथा कुछ इसके समीपवर्ती स्थलों यथा गुलगांव, विदिशा, मुरेलखुर्द एवं ग्यारसपुर से प्राप्त हुए हैं। प्रदर्शित पुरावशेषों में 20 से अधिक दुर्लभ पुरावशेष हैं जो तीसरी

शती ई० पूर्व से लेकर मध्य कालीन है। इनमें सर्वोच्च कलाकृति अशोक द्वारा निर्मित एकाश्म स्तम्भ का सिंह शीर्ष है। संग्रहालय में दो अन्य स्तम्भों कमांक– 26 (धर्म चक) एवं 35 (बोधिसत्व वज्रपाणि) भी प्रदर्शित हैं। अन्य महत्वपूर्ण प्रदर्शित पुरावशेषों में सारिपुत्र एवं मौदगलायन के अस्थि कलश के ढक्कन हैं। स्तूप कमांक–1 के दक्षिणी तोरण द्वार के अंश भी संग्रहालय में प्रदर्शित हैं जिनमें महत्वपूर्ण भगवान बुद्ध के आत्मज्ञान से सम्बन्धित है। संग्रहालय में मन्दिर कमांक–18 की पूर्वी द्वारशाखा जिस पर गंगा अपने अनुचरों, पुष्प वल्लरियों एवं मानव आकृति के साथ प्रदर्शित है, उपलब्ध है। संग्रहालय में प्रदर्शित लौह उपकरण जिनमें खेती एवं अन्य औजार सम्मिलित है यह दर्शाते हैं कि साँची के लोग विभिन्न कियाकलापों से सम्बद्ध थे। यहाँ के अन्तिम चरण से प्राप्त ब्राम्हण धर्म से सम्बन्धित प्रतिमाएं मुस्लिम शासन आने के पूर्व की संकमण कालीन दशा की ओर इंगित करती है। कुछ विशिष्ट प्रतिमाएं जैसे चुण्डा, तारा, जम्भल, वज्रसत्व इत्यादि भी संग्रहालय में प्रदर्शित हैं जो साँची में उत्तर बौद्ध काल पर प्रकाश डालती है। साँची के पूर्व एवं वर्तमान से सम्बन्धित एक शोध दीर्घा भी स्थापित की गई है। इस दीर्घा में पुराने छायाचित्र, मानचित्र, स्केच तथा कुछ लेख भी प्रदर्शित हैं। यह दीर्घा सन् 1818 से अब तक साँची के खोज का इतिहास, उत्खनन एवं संरक्षण पर प्रकाश डालती है। यहाँ कुछ अप्रकाशित एवं दुर्लभ पुराने छायाचित्र एवं ड्राईंग (1854–1935) जिनमें स्मारकों के पूर्व एवं पश्चात् संरक्षण का सम्बन्धित छायाचित्र सम्मिलित हैं, प्रदर्शित करने का प्रयास किया गया। संग्रहालय भवन के द्वारा पर्यटकों को साँची स्मारकों के बारे में और जानकारी मिलती है जो केवल स्मारकों के भ्रमण द्वारा ही सम्भव नहीं है।

मुख्य हाल

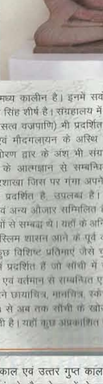

यहाँ प्रदर्शित पुरावशेष मुख्यतः 6 सांस्कृतिक कालों यथा मौर्य, सातवाहन, कुषाण, गुप्त एवं उत्तर गुप्त काल (तीसरी शती ईस्वी पूर्व से 7 वीं ईस्वी तक) का प्रतिनिधित्व करते हैं। मौर्य काल से सम्बद्ध पुरावशेषों में सर्वो... रचना अशोक स्तम्भ का सिंह शीर्ष है जिस पर उच्चकोटि की पॉलिश की ... इसे मुख्य हाल के अन्त में प्रदर्शित किया गया है। तीसरी शती ईस्वी पूर्व के मुख्य पुरावशेषों में चुनार पत्थर की पॉलिश की हुई छत्रावली जो सम्भवतः ... द्वारा निर्मित ईट के स्तूप से सम्बद्ध रही होगी तथा बलुआ पत्थर का पॉलिश ... हुआ कटोरा भी सिंह शीर्ष के पार्श्व में प्रदर्शित है। शुंग काल के प्रदर्शित पुरा... में स्तूप कमांक–2 की रैलिंग जिस पर दान दाताओं के नाम प्रारम्भिक ब्राह्मी में अंकित हैं एवं नागराज की एकाश्म प्रतिमा जो साँची के निकट गुलगांव ... गई है।

यहाँ सातवाहन काल के अत्यधिक अलंकृत पुरावशेष भी प्रद... जिनमें प्रमुख रूप से दो यक्षी (शालभंजिका) आम के फल से भरी हुई डा... पकड़े हुए प्रदर्शित हैं। इनकी शारीरिक कोमलता एवं सुघढ़ता देखने योग्य है। तोरण भाग जिस पर एक पीपल के वृक्ष के नीचे आत्म ज्ञान करते हुए ... अंकन है, बुद्ध के प्रतीकात्मक स्वरूप को प्रदर्शित करता है। कुषाण काल की कला से सम्बन्धित कुछ अन्य मूर्तियाँ भी यहाँ प्रदर्शित हैं जिनमें लाल बलुए ... से निर्मित बोधिसत्व जिस पर कुछ धब्बे हैं तथा एक आधार पर देवता के ... अंकित हैं। उक्त दो प्रतिमाएं साँची एवं मथुरा के मध्य सम्बन्धों पर प्रकाश ... है।

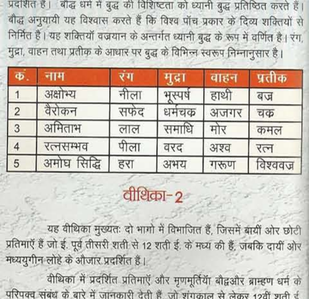

यहाँ पर गुप्त काल एवं उत्तर गुप्त काल से सम्बद्ध कुछ प्राकृतिक सुघड़ एवं उत्कृष्ट प्रतिमाएं जो बौद्ध देवताओं से सम्बद्ध तथा स्थानीय बलुआ पत्थर से निर्मित हैं, भी प्रदर्शित है। इनमें मुख्य प्रतिमा ध्यानमुद्रा में पीठासीन बुद्ध शीर्ष विहीन स्थानक बुद्ध, स्थानक बोधिसत्व, पदमपाणि एवं वज्रपाणि की है।

वीथिका –1

यहाँ बलुए पत्थर से निर्मित विशालकाय बौद्ध प्रतिमायें प्रदर्शित हैं जो अपनी संरचना के आधार पर गुप्त तथा उत्तर मध्य काल की कला एवं संस्कृति को प्रदर्शित करती हैं। अशोक द्वारा निर्मित सिंह स्तभ की एक अस्पष्ट प्रतिकृति प्रदर्शित है जिसमें एक दूसरे की ओर पीठ किये हुए चार सिंह तथा धर्म चक अंकित है जो गुप्त काल की है। अन्य प्रमुख प्रदर्शित पुरावशेषों में शुभ चिन्हों से अंकित ध्यानमुद्रा में बुद्ध की स्थानक प्रतिमा है जो वरद मुद्रा में हैं तथा नागराज की दो बड़ी प्रतिमाएं भी प्रदर्शित है।

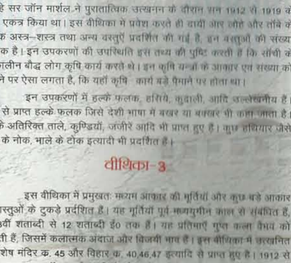

यहाँ मनौती स्तूप भी प्रदर्शित किये गये हैं जिनमें पाँच ध्यानी बुद्ध प्रदर्शित हैं। बौद्ध धर्म में बुद्ध की विशिष्टता को ध्यानी बुद्ध प्रतिष्ठित करते हैं। बौद्ध अनुयायी यह विश्वास करते हैं कि विश्व पाँच प्रकार के दिव्य शक्तियों से निर्मित है। यह शक्तियों वज्रयान के अन्तर्गत ध्यानी बुद्ध के रूप में वर्णित है। रंग, मुद्रा, वाहन तथा प्रतीक के आधार पर बुद्ध के विभिन्न स्वरूप निम्नानुसार है।

क.	नाम	रंग	मुद्रा	वाहन	प्रतीक
1	अक्षोभ्य	नीला	भूस्पर्ष	हाथी	बज्र
2	वैरोकन	सफेद	धर्मचक	अजगर	चक
3	अमिताभ	लाल	समाधि	मोर	कमल
4	रत्नसम्भव	पीला	वरद	अश्व	रत्न
5	अमोघ सिद्धि	हरा	अभय	गरूण	विश्ववज्र

वीथिका-2

यह वीथिका मुख्यतः दो भागो में विभाजित हैं, जिसमें बायीं ओर छोटी प्रतिमाएँ हैं जो ई. पूर्व तीसरी शती से 12 शती ई. के मध्य की हैं, जबकि दायीं ओर मध्ययुगीन लोहे के औजार प्रदर्शित हैं।

वीथिका में प्रदर्शित प्रतिमाएँ और मृणमूर्तियाँ बौद्धऔर ब्राम्हण धर्म के परिपक्व संबंध के बारे में जानकारी देती हैं, जो शुंगकाल से लेकर 12वीं शती ई. तक प्रचलन में रहा। मुख्य प्रतीमाएँ जिसमें दो भुजी स्थानक विष्णु प्रतिमा, गुप्त काल के अवलोकितेश्वर और बुद्ध, जटामुकुटधारी शिव, अवलोकितेश्वर के जटामुकुट में ध्यानी बुद्ध, अमिताभ और कुछ बाम्हाण धर्म से संबंधित फलक जिसमें विष्णु, गणेश और महिषासुर मर्दिनी इत्यादि भी इस विथिका में देखे जा सकते हैं।

वीथिका में दायीं ओर कुछ मध्ययुगीन लोहे के औजार प्रर्दशित हैं,

जिन्हे सर जॉन मार्शल ने पुरातात्विक उत्खनन के दौरान सन 1912 से 1919 के बीच एकत्र किया था। इस वीथिका में प्रवेश करते ही दायीं ओर लोहे और ताँबे के अनेक अस्त्र–शस्त्र तथा अन्य वस्तुएँ प्रदर्शित की गई है, इन वस्तुओं की संख्या अधिक है। इन उपकरणों की उपस्थिति इस तथ्य की पुष्टि करती है कि साँची के तत्कालीन बौद्ध लोग कृषि कार्य करते थे। इन कृषि यन्त्रों के आकार एवं संख्या को देखने पर ऐसा लगता है, कि यहाँ कृषि कार्य बड़े पैमाने पर होता था।

इन उपकरणों में हल्के फलक, हसिये, कुदाली, आदि उल्लेखनीय है। यहाँ से प्राप्त हल्के फलक जिसे देशी भाषा में बखर या बक्खर भी कहा जाता है। इसके अतिरिक्त ताले, कुण्डियाँ, जंजीरें आदि भी प्राप्त हुए हैं। कुछ हथियार जैसे बाण के नोक, भाले के टोक इत्यादी भी प्रदशित हैं।

वीथिका-3

इस वीथिका में प्रमुखतः मध्यम आकार की मूर्तियाँ और कुछ बड़े आकार के वास्तुओं के टुकड़े प्रर्दशित हैं। यह मूर्तियाँ पूर्व मध्ययुगीन काल से संबधित हैं, जो 8वीं शताब्दी से 12 शताब्दी ई० तक हैं। यह प्रतिमाएँ गुप्त कला वैभव को दर्शाती हैं, जिसमें कलात्मक अंदाज और विजयी भाव है। इस वीथिका में उत्खनित पुरावशेष मंदिर क. 45 और विहार क. 40,46,47 इत्यादि से प्राप्त हुए है। 1912 से 1919 तक सर जॉन मार्शल की देखरेख में यह उत्खनन संपादित हुआ। यह प्रतिमाएँ मुख्यतः वज्रयान से संबधित है, तथा यह दर्शाती है कि साँची में वज्रयान का प्रभाव था।

यहाँ प्रदर्शित प्रतिमाएँ मुख्यतः चुन्दा, सडाक्षरी तारा, खादीरवाणी तारा, जंभाल, वज्रधर्म लोकेश्वर, वज्रसत्व इत्यादि हैं। इसमें कुछ ब्राम्हण देवता भी पूज्य थे जिसमें मुख्यतः वरूण, कुबेर, अग्नि, नऋति इत्यादि हैं। कुछ अलग प्रकार की प्रतिमाएँ जिनमें माँ शिशु के साथ तथा शिव ललितासन में प्रदर्शित है। यह प्रतिमाएँ साँची से लगभग 45 कि. मी. दूरी पर ग्यारसपुर जिला विदिशा से लायी गई है।

छायाचित्र वीथिका

यहाँ स्थल से सम्बन्धित प्राचीन छायाचित्र, रेखाचित्र, रेखा... लेख प्रदर्शित किये गये हैं। यह वीथिका साँची स्थित बौद्ध स्मारकों ... उत्खनन एवं संरक्षण कार्यो पर प्रकाश डालती है। सन् 1818 में जनरल ... स्थल की पुनः खोज की तथा जनमानस का ध्यानाकर्षित किया। यहाँ ... विशेषज्ञों द्वारा सन् 1919 तक कार्य किया गया। इस शोध वीथिका को ... बनाने हेतु स्मारकों के संरक्षण कार्य की पूर्व एवं पश्चात की अवस्थाएं ... कुछ दुर्लभ एवं बहुमूल्य प्रचीन प्रकाशित छायाचित्र एवं रेखाचित्र प्रदर्शित ... हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात स्थल के संरक्षण का कार्य भारतीय ... सर्वेक्षण विभाग के द्वारा सुचारू रूप से किया जा रहा है। विभाग के द्वारा ... उत्खननों के परिणामस्वरूप कई स्मारकों के अवशेष प्रकाश में आए हैं। ... कमांक 18 के गिरे हुए तीन स्तम्भ यथास्थान लगाए गए। स्थल को सु... हेतु विभाग की उद्यान शाखा द्वारा हरियाली विकसित की गई है।

LOCATION PLAN MUSEUM, SANCHI DIST. - RAISEN (M.P.)

संग्रहालय खुलने का समय

प्रातः 9 बजे से 5 बजे तक (शुक्रवार अवकाश)

कोई पृथक प्रवेश शुल्क नहीं

सहायक अधीक्षण पुरातत्वविद्
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण,
पुरातत्व संग्रहालय, साँची, जिला–रायसेन
(म.प्र.) फोन : 07482–266611
e-mail : museumsanchiasi@gmail.com